प्राककथन

नये युग के समकालीन समर्थ कथाकारों में मालती जोशी का नाम एक संवेदनशील लेखिका के रुप में परिचित है । इन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं में अपनी लेखनी उठायी है । काव्य, बाल–साहित्य, कथा–साहित्य, अपन्यास-साहित्य तथा अनुवाद, कथा-कथन आदि क्षेत्र में सफलता से लेखन करते हुए भी विशेषतः उपन्यास तथा कहानी क्षेत्र में ख्याति अर्जित की है । बचपन से मध्यवर्गीय महिला होने के कारण अपने कथा साहित्य में इसी मध्यवर्गीय जीवन की विवशता, विडम्बनाओं का सूक्ष्म तथा पैनी अंतदृष्टि से जीवन की सारी अनुभूतियों का सफलतम चित्रण किया है । अतः मालती जोशीने अपने समकालीन परिस्थितियों का सर्वांगीण चित्रण प्रस्तुत करने के लिए उपन्यास तथा कहानी विधा को अपना साधन बनाया ।

मालती जोशी की कहानियों पर शोधकार्य करने की प्रेरणा मुझे तब मिली जब मैने उनकी "मालती जोशी की कहानियाँ" यह कहानी संग्रह पढा । स्वातंत्र्योतर भारतीय मध्यवर्गीय नारी जीवन का यथार्थ तथा मर्मस्पर्शी चित्रांकन जितना इनके साहित्य में है, उतना अन्य किसी महिला कहानीकारो में मुझे नजर नही आया । इनकी कहानियों के नारी पात्र ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया । परिणामतः मैने इनकी समस्त कहानियों का अनुशीलन करने का दृढ संकल्प किया । इस शोध–प्रबंध के सहारे मेरा यह संकल्प साकार हुआ ।

'मालती जोशी' के साहित्य पर शिवाजी विश्वविद्यालय में अब तक कोई छात्राओं ने शोध–कार्य नहीं किया है इसीकारण मैंने इस विषय को लेकर यह शोध–कार्य पूरा किया है । पूना युनिवरसिटी में एक सज्जन 'मालती जोशी के उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन' इस विषयपर एम.फिल. सन – 1992 में शोध–प्रबंध पूर्ण किया है । इनका नाम है – प्रा. सुभाष तलेकर, वाघीरे कॉलेज सासवड ।

इस लघु–शोध का अध्ययन करते समय मेरे सामने निम्नांकित प्रश्न थे -- – – –

1) मालती जोशी की कहानियों में नारी जीवन की कौन–कौन सी समस्याएँ हैं ?

2) समकालीन कथा लेखिकाओं में मालती जोशी का स्थान कितना महत्वपूर्ण है ?

3) मालती जोशी की कहानियों में भारतीय नारी जीवन की विशेषताएँ क्या हैं ?

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

4) **मालती जोशी की कहानियों** में नारी को ही अधिक महत्व क्यों हैं ?

मालती जोशी के कहानियों में चित्रित समस्याओं का अनुशीलन करते समय मैने उपरोक्त सवालों का जवाब ढूँढने का प्रयास किया है ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध चार अध्यायों में विभाजित है ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के प्रथम अध्याय में मालती जोशी का जीवन परिचय दिया है । साथ ही साथ अनके कृतित्व पर संक्षेप में विचार किया है । इस अध्याय में मालती जोशी के जन्म से लेकर आज तक के वैयक्तिक तथा साहित्यिक जीवन यात्रा का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया है । उनके व्यक्तित्व निर्माण में घर, परिवार, पिता, पति, माता तथा गुरुजन आदि का भी योगदान रहा । उसे इसमें देखा है । उनके साहित्यिक कृतित्व पर भी संक्षिप्त रुप में नजर डाली है ।

द्वितीय अध्यायमें सगकालीन महिला-ओं की कहानियों पर प्रकाश डाला है । इसमें हिन्दी कथा साहित्य में महिला लेखिकाओंने अपने योगदान के जरिए किस प्रकार नारी जीवन की समस्याओं का चित्र चित्रित किया है इसका विवेचन किया है । समकालीन युग के प्रतिनिधि महिला कहानीकारों का परिचय देकर, उनकी रचनाओं में चित्रित नारी जीवन को स्पष्ट करके उसमें मालती जोशी का महत्वपूर्ण स्थान निर्धारित किया है । ये सभी लेखिकाएँ नारी जीवन को अपने कथ्य का आधार बनाकर वास्तविक नारी जीवन का चित्रांकण किया है इनमें - मन्नू भंडारी, शिवानी, उषा - प्रियवंदा दीप्ति खंडेलवाल, ममता कालिया, रजनी पनीकर, मृदला गर्ग, कृष्णा सोबती, मृणाल पाण्डे, नेहरुन्निसा परवेज, मालती जोशी आदि समकालीन कथाकारों का परिचय प्रस्तुत किया है अध्याय के अंत में मालती जोशी किसतरह इस दृष्टि में समकालीन महिला कथाकारों से भिन्न होने की गवाही देती है इसका विवेचन किया है ।

तृतीय अध्याय में मालती जोशी की कहानियों में चित्रित समस्याओं का विस्तृत विवेचन किया है इन समस्याओं को अध्ययन की सुविधा के लिए वर्गीकरण करके प्रस्तुत किया गया है । ये समस्याएँ प्रमुखता से पारिवारिक, राजनीतिक तथा आर्थिक इस प्रकार विभाजित करके प्रस्तुत की हैं । इस लघु-शोध प्रबंध में यही अध्याय केंद्र स्थान पर है । इसमें नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं की रुपरेखा का दृष्टांत होता है । इसी कारण यही अध्याय इस शोध-प्रबंध की जान है ।

चतुर्थ अध्याय में हमने कहानियों के तत्वों के आधार पर मालती जोशी की कहानियों का अध्ययन का विश्लेषण प्रस्तुत किया था, परंतु प्रथम तीन अध्यायों की तुलना में चतुर्थ अध्याय के पृष्ठों की संख्या अधिक बढने के दृष्टि से तथा परस्पर अध्ययों का आकार विषयक असंतुलन पाया गया । अतएवं चतुर्थ अध्याय पंचम अध्याय में रुपांतरित करके मालती जोशी की कहानियों की विशेषताएँ तक ही सीमित रखा है ।

अंत में उपसंहार के रुप में प्रस्तुत किया गया है – जिसमें संपूर्ण शोध कार्य का सार रुप दिया है । मालती जी के कहानियों में चित्रित समस्याओं का अनुशीलन करने के उपरांत जो निष्कर्ष हाथ लगे, वे उपसंहार में देने का प्रयास किया है ।

प्रबंध के अंत में परिशिष्ट तथा संदर्भ ग्रंथ सूची दी है । इस शोध–प्रबंध को संपन्न करने के लिए सहायक पुस्तक की सूची तथा लेखक का नाम, पृष्ठ संख्या सहित दी है ।

* * * कृतज्ञता ज्ञापन * * *

सर्वप्रथम, मैं अपने आदरणीय गुरुवर **डॉ. के. पी. शहा** सर जी की अनंत कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मुझे शोध–प्रबन्ध पूर्ण करने में प्रेरणापूर्ण निर्देशन किया । उनकी में आजीवन ऋणी हूँ ।

द्वितीय, में मै. आदरणीय लेखिका **श्रीमती मालती जोशी** के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती हूँ, जिन्होने मुझे प्रबंध–लेखन की सामग्री को भेज ही दीया साथ साथ 'दीदी' के नाते अपना प्रेम और आशिर्वाद भी दिया है और बार–बार पत्र लिखकर मुझे अनुसंधान करने की प्रेरणा भी दी है ।

आदरणीय **डॉ. वसंतराव जोशी** की मैं बहुत ऋणी हूँ जिन्होने मुझे एम.फिल. करने के लिए प्रवृत्त किया ।

आदरणीय **डॉ. वसंतराव मोरेजी** हिन्दी विभाग में प्रमुख थे । उनके प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ ।

प्रा. सुभाष तलेकर हिन्दी – वाघीरे कॉलेज सासवड (जि. पुणे) के प्रति मैं विशेष आभारी हूँ, जिन्होने मुझ पर विश्वास रखकर अपने शोध–प्रबंध की प्रति दी । जिसके कारण मेरा शोध–प्रबंध पूर्ण हो सका ।

एस.एस. आर्टस कॉलेज और एल.के. खोत कॉलेज के प्राचार्यों का मै. आभार मानती हूँ । जिन्होंने मुझे कॉलेज के वक्त में अनुसंधान करने की सुविधा करा दी ।

शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापूर के खार्डेकर पुस्तकालय की मैं आभारी हूँ, जिन्होने आवश्यकता के अनुसार मेरी सहायता की है ।

परिवार में मेरे पति, देवर, तथा माता–पिता और भाई ने जो सहयोग दिया है उनके प्रति मैं ऋणी हूँ । उसी के साथ **प्रा. शोभा नाईक** तथा **चाचा कुंभार** की मैं आभारी हूँ जिन्होने मुझे एम.फिल. पूर्ण होने तक अपनी बेटी समझकर अपने घर में सुविधा कर दी ।

इसके साथ ही इस शोध–प्रबंध को ठीक वक्त पर टाईप करके मुझे सहयोग दिया उस टंकलेखक का भी मैं आभारी हूँ ।

सोलापूर.
दिसम्बर – 1994.

(महादेवी दु. गुरव)